REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2018

''उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यालयी वातावरण में छात्र छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन''।

सन्तोश डबराल[1] , डॉ. डी.एस.गड़िया[2]
[1]शोध–छात्र,(शिक्षाभाास्त्र),शिक्षा विभाग,हिमगिरी जी विश्वविद्यालय,देहरादून,
[2]''ऐसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,शिक्षा विभाग, हिमगिरी जी विश्वविद्यालय,देहरादून,

सारांश(Abstrac)

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य,विद्यार्थियों की उपलब्धि के परिप्रेक्ष्य में विद्यालयी वातावरण का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध कार्य हेतु यादृच्छिक शोध विधि का प्रयोग किया गया है तथा शून्य परिकल्पनाओं को निर्मित किया गया है। प्रस्तुत शोध के लिए शोधकर्ता ने न्यादर्श में 90 छात्र 60 छात्राओं को न्यादर्श में शामिल किया है। शोधकर्ता ने छात्र–छात्राओं की उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभावों को जानने के लिए यादृच्छिक विधि द्वारा ऋषिकेश क्षेत्र में से माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया तथा इसके लिए डॉ0 करूणा शकंर मिश्रा जी द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग शोध के लिए प्रस्तावित किया।

प्रस्तावना–

मानव जीवन में शिक्षा को बहुत बड़ा महत्व प्राप्त हुआ है। शिक्षा के क्षेत्र मे अनेक बदलाव आ रहे है। ज्ञान की कक्षाओं का विस्तार हो रहा है। ज्ञान की नई–नई संकल्पनाओं का उद्गम हो रहा है। प्राचीन काल से ही भारत देश ज्ञानी, तपस्वी, ऋषीमुनीओं का देश के रुप मे पहचान जाता था। सत्य शिव और सुन्दर इन्हें जीवन की अंतिम मूल्य समझने तथा अनुभावित करने की क्षमता मानव को शिक्षा से ही प्राप्त होती है। यह विचार पाश्चात्य दार्शिनिक प्लेटो ने ईसी पूर्व 427 से ईसी पूर्व 347 इस काल मे प्रस्तूत किया । शिक्षा संस्कृत शब्द का उद्भव शिक्ष धातु से हुआ है इसका अर्थ है उपदेश के द्वारा परिवर्तन लाना है। शिक्षा से व्यक्ति का सर्वांगीण विकास हो तथा वह उत्तम नागरिक बने,इसलिए शिक्षा की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। विद्यालयी वातावरण विद्यालय के चारों ओर का वह पवित्र वातावरण है जिसका बालक के जीवन पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता रहता है। विद्यालय का भौतिक वातावरण जिसमे शुद्ध वनस्पतियाँ, पेड़–पौधे सभी का संयुक्त संगठन है। आज विद्यालय में छात्रों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है।वातावरण की आवश्यकता मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है अतः उसका विकास परिवार, विद्यालय एवं समाज में होता है जिसके लिए वह वातावरण पर निर्भर रहता है तथा वातावरण में सांसे लेता है। मनुष्य प्रकृति के साथ प्रत्येक रुप से जुड़ा रहता है।

उद्देश्य–

- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिन्दी माध्यम एवं विद्या मन्दिर के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिन्दी माध्यम एवं राजकीय विद्यालय के छात्र छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी माध्यम एवं विद्या मन्दिर विद्यालय के छात्र छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

परिकल्पनायें–

उपर्युक्त उद्देश्यों के आधार पर प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में निम्न शून्य परिकल्पनाओं का वर्णन किया गया है–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिन्दी माध्यम एवं विद्या मन्दिर के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिन्दी माध्यम एवं राजकीय विद्यालय के छात्र छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी माध्यम एवं विद्या मन्दिर विद्यालय के छात्र छात्राओं की श शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

विधि–:

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा मध्यांक, माध्य, बहुलक एवं एस॰ डी॰ तथा टी टेस्ट आदि सांख्यिकी प्राविधियों का प्रयोग कर निष्कर्ष प्राप्त किये गये ।

न्यादर्श–:

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने अपने शोध न्यादर्श में सम्भावना एवं आवश्यकतानुसार न्यादर्श की यादृच्छिक (दैवीय) विधि का चयन किया। इस विधि में इकाईयों का चयन अनियमितता द्वारा किया जाता है, इसमें जनसंख्या की प्रत्येक इकाई के चुने जाने के समान अवसर होते है। प्रस्तुत शोध के लिए शोधकर्ता ने न्यादर्श में 90 छात्र 60 छात्राओं को न्यादर्श में शामिल किया है।

शोध उपकरण–:

शोधकर्ता ने छात्र–छात्राओं की उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभावों को जानने के लिए यादृच्छिक विधि द्वारा ऋषिकेश क्षेत्र में से माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया तथा इसके लिए डॉ0 करूणा शकंर मिश्रा जी द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग शोध के लिए प्रस्तावित किया। इससे प्राप्त परिणामों से सांख्यिकी विश्लेषण के आधार पर शोधकर्ता ने शोधकार्य के निष्कर्ष प्राप्त किये।

क्षेत्र निर्धारण–:

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने विद्यालयी वातावरण का उनके उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया।

- छात्रों की उपलब्धि में योगदान का एक अध्ययन से सम्बन्धित क्षेत्र का निर्धारण किया।
- प्रस्तावित शोध अध्ययन मे दैवीय प्रतिदर्श यादृिच्छक प्रतिदर्श पद्धति का प्रयोग किया जायेगा।
- कक्षा 11 के 150 छात्र–छात्राओं का यादृच्छिक पद्धति के सिद्धान्त पर चयन करके विभिन्न प्रकार की सूचनायें एकत्रित की गई हैं। इन सिद्धान्तों पर शोध कार्य निर्भर है।

सीमांकन–:

प्रस्तावित शोधकार्य के लिए शोध अध्ययन ऋषिकेश तक सीमित रखा गया। शोधकार्य को व्यवस्थित ढंग से पूरा करने, समय एवं धन की बचत करने तथा व्यर्थ के कार्यो से बचने के लिए शोधकार्य की सीमायें निर्धारित करना बहुत आवश्यक है। प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने अपने कार्य की निम्नलिखित सीमांये निर्धारित की है

- शोध कार्य देहरादून जनपद के ऋषिकेश क्षेत्र तक ही सीमित रखा गया।
- ऋषिकेश क्षेत्र के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम, विद्या मन्दिर, राजकीय विद्यालय के विद्यालयों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया।

- ऋषिकेश क्षेत्र के 10 विद्यालयों में 90 छात्र एवं 60 छात्राओं का चयन किया गया।
- इस प्रकार कुल 10 विद्यालयों में 150 छात्र–छात्राओं का चयन शोध कार्य मे न्यादर्श के लिए किया गया।
- प्रस्तुत शोध मे शोधकर्ता ने विद्या मन्दिर एवं राजकीय विद्यालय तथा हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों मे जाकर मानवीकृत प्रश्नावली का प्रशासन 150 छात्र–छात्राओं पर किया। शैक्षिक उपलब्धि के लिए उनकी पूर्व कक्षा के प्राप्ताकं पत्र के आधार पर शैक्षिक अधिगम उपलब्धि पर आधारित है।

आंकड़ों का विश्लेशण–:

सारणी संख्या 01

उद्देश्य 01: उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

Ho_1: उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	न्यादर्श का आकार	आवृति अंश(df)	टी का मान	सार्थकता का स्तर
हिन्दी माध्यम	48.27	7.55	45	88	17.19	.01
अंग्रेजी माध्यम	77.5	8.55	45			2.63

सारणी संख्या 01 से ज्ञात होता है कि हिन्दी माध्यम के 45 विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि 48.27 तथा प्रमाणिक विचलन 7.55 और अंग्रेजी माध्यम के 45 विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि 77.5 तथा प्रमाणिक विचलन 8.55 है। 88 स्वतन्त्र कोटि पर 'टी' का प्राप्त मान 17.19 है जोकि 0.01 सार्थकता स्तर पर 'टी' सारणी का मान 2.63 से बहुत अधिक है। अतः हिन्दी माध्यम के विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है। अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि बहुत अधिक है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत हुई ।

सारणी संख्या 02

उद्देश्य 02: उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिन्दी माध्यम एवं विद्या मन्दिर के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

Ho_2: उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिन्दी माध्यम एवं विद्या मन्दिर के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि मे कोई सार्थक अन्तर नही है।

न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	न्यादर्श का आकार	आवृति अंश(df)	टी का मान	सार्थकता का स्तर
हिन्दी माध्यम	48.27	7.55	45	88	9.70	.01
विद्या मन्दिर	65.16	8.9	45			2.63

सारणी संख्या 02 से ज्ञात होता है कि हिन्दी माध्यम के 45 विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि 48.27 तथा प्रमाणिक विचलन 7.55 और विद्या मन्दिर के 45 विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि 65.16 तथा प्रमाणिक विचलन 8.9 है। 88 स्वतन्त्र कोटि पर 'टी' का प्राप्त मान 9.70 है जोकि 0.01 सार्थकता स्तर पर 'टी' सारणी का मान 2. 63 से बहुत अधिक है। अतः विद्या मन्दिर के विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है। विद्या मन्दिर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि बहुत अधिक है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत हुई ।

सारणी संख्या 03

उद्देश्य 03: उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिन्दी माध्यम एवं राजकीय विद्यालय के छात्र छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

Ho_3: उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिन्दी माध्यम एवं राजकीय विद्यालय के छात्र छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	न्यादर्श का आकार	आवृति अंश(df)	टी का मान	सार्थकता का स्तर
हिन्दी माध्यम	48.27	7.55	45	58	2.27	0.01
राजकीय विद्यालय	43.83	6.18	15			2.63

सारणी संख्या 03 से ज्ञात होता है कि हिन्दी माध्यम के 45 विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि 48.27 तथा प्रमाणिक विचलन 7.55 और राजकीय विद्यालय के 15 विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि 43.83 तथा प्रमाणिक विचलन 6.18 है। 58 स्वतन्त्र कोटि पर 'टी' का प्राप्त मान 2.27 है जोकि 0.01 सार्थकता स्तर पर 'टी' सारणी का मान 2.63 से कम है। अतः हिन्दी माध्यम के विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है। हिन्दी माध्यम के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि बहुत अधिक है। अतः परिकल्पना स्वीकृत हुई ।

सारणी संख्या 04

उद्देश्य 04: उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी माध्यम एवं विद्या मन्दिर विद्यालय के छात्र छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

Ho_4: उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी माध्यम एवं विद्या मन्दिर विद्यालय के छात्र छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	न्यादर्श का आकार	आवृति अंश(df)	टी का मान	सार्थकता का स्तर
अंग्रेजी माध्यम	77.75	8.55	45	88	6.74	0.01
विद्या मन्दिर	65.16	8.9	45			2.63

सारणी संख्या 04 से ज्ञात होता है कि अंग्रेजी माध्यम के 45 विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि 77.5 तथा प्रमाणिक विचलन 8.55 और विद्या मन्दिर के 45 विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि 65.16 तथा प्रमाणिक विचलन

8.9 है। 88 स्वतन्त्र कोटि पर 'टी' का प्राप्त मान 6.74 है जोकि 0.01 सार्थकता स्तर पर 'टी' सारणी का मान 2. 63 से अधिक है। अतः अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही है। अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि बहुत अधिक है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत हुई ।

निष्कर्ष एवं व्याख्या

- हिन्दी माध्यम के विद्यालयों का विद्यालयी वातावरण का मध्यमान मूल्य अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की अपेक्षा विद्यालयी वातावरण मध्यमान कम पाया गया अतः इन दोनों मे सार्थकता अन्तर पाया गया।
- हिन्दी माध्यम के विद्यालयों का विद्यालयी वातवारण का मध्यमान मूल्य विद्या मन्दिर के विद्यालयों के विद्यालयी वातावरण मध्यमान मूल्य की अपेक्षा अधिक पाया गया।
- हिन्दी माध्यम के विद्यालयों के विद्यालयी वातावरणीय मध्यमान मूल्य राजकीय विद्यालय के वातावरणीय मध्यमान मूल्य अधिक पाया गया। अतः दोनों मे सार्थकता अन्तर का स्तर उच्च पाया गया।
- अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के विद्यालयी वातावरणीय मध्यमान मूल्य विद्या मन्दिर के विद्यालयो के विद्यालयी वातावरणी मध्यमान मूल्य की अपेक्षा कम पाया गया।अतः दोनों के वातावरण मध्यमान में सार्थकता अन्तर पाया गया।
- हिन्दी माध्यम के विद्यालयो की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान का मूल्य 48.27 प्रतिशत पाया गया।
- अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयो की शैक्षिक उपलब्धि माध्यमान मूल्य 77.5 पायी गई।
- विद्या मन्दिर के विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि मध्यमान मूल्य 65.16 पाई गई।
- राजकीय स्कूल की शैक्षिक उपलब्धि मध्यमान मूल्य 43.83 पाई गई।
- विद्यालयी शैक्षिक उपलब्धि मध्यमान की दृष्टि से अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि सर्वाधिक पाई गई।

भावी अध्ययन हेतु सुझाव–:

- हिन्दी माध्यम एंव अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयी शैक्षिक उपलब्धि के माध्मान की सार्थकता स्तर से उच्च अन्तर के कारणो का पता लगाना।
- हिन्दी माध्यम की शैक्षिक उपलब्धि की कमी के कारणों का अध्ययन करना।
- अंग्रेजी माध्यम की अपेक्षा अन्य विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि आने वाली कमी के कारणो का अध्ययन करना।
- राजकीय विद्यालय की छात्राओं का शैक्षिक उपलब्धि सबसे कम पाई गई इसको प्रभावित करने वाले कारणो का अध्ययन करना।
- हिन्दी माध्यम की शैक्षिक उपलब्धि एवं अग्रेंजी माध्यम की शैक्षिक उपलब्धि मे अन्तर को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।
- विद्यालयी वातावरण अच्छा होने के बावजूद भी शैक्षिक उपलब्धि स्तर मे कमी पाई गई इसके कारणो का अध्ययन करना।
- विद्यालयी वातावरण उत्तम होने पर भी तथा कुछ विद्यालयों मे शिक्षको की कमी पाई गई इसके कारणों को ज्ञात करना।
- विद्यालयों मे शिक्षकों की कुशलता का अध्ययन करना

सन्दर्भ ग्रन्थः

1. प्रदीप कुमार कुलश्रेष्ठ,(1992) "द इफैक्ट ऑफ स्कूल एनवायरनमेन्ट ऑन एडजस्टमेन्ट,स्टडी हैबिट्स एण्ड अचिवमेंट ऑफ हाईस्कूल स्टूडेंटस।" पी0एच0डी0 एजुकेशन,आगरा वि0वि0।

2. बाल सुब्रमण्यम एन0,(2002) ''अंग्रेजी विषय की उपलब्धि एवं कक्षा वातावरण का उच्च माध्यमिक स्तर पर प्रभाव का अध्ययन''। पी0एच0डी0 एजुकेशन,कानपुर वि0वि0।
3. बृजेश एन0 बी0, (2003) ''विद्यालय की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन केरल रात्य के सरकारी और पब्लिक स्कूलों का तुलनात्मक अध्ययन।'' पी0एच0डी0 एजुकेशन,कानपुर वि0वि0।
4. मिश्रा के0एस0, (1981) ''इफैक्ट ऑफ चिल्ड्रनस प्रिंसपल्स ऑफ होम एण्ड स्कूल इनवायरमेन्ट ऑन दियरसाइनटिफिक केयटिविटी,डॉक्टराल, ।''डिजरटेशन,राजस्थान यूनिवर्सिटी।
5. मिश्रा के0एस0, (1982)''इफैक्ट ऑफ टीचर्स कंट्रोल्स ऑन स्टूडेन्ट साइनटिफिक केयटिविटी'',आर्य जर्नल ऑफ एजुकेशन्स।
6. शुक्ला,एम0, (1983) ''इफैक्ट ऑफ इनटेलीजेन्स एण्ड स्कूल इनवायरमेन्ट ऑन अचिवमेंट इन बायोलॉजी,''एम0एड0 डिजरटेशन,इलाहाबाद यूनिवर्सिटी।

सन्तोश डबराल
शोध–छात्र,(शिक्षाभाास्त्र),शिक्षा विभाग,हिमगिरी जी विश्वविद्यालय,देहरादून,